www.jagran.com

औषधीय पौधों के संरक्षण के लिए सार्थक पहल

वाराणसी : विंध्य क्षेत्र औषधीय पौधों से मालामाल लेकिन इन पौधों का ज्ञान व लाभ अब बुजुर्गों तक ही सीमित। दूसरी पीढ़ी इसके बारे में जानने को उत्सुक नहीं, नतीजतन बीस फीसद औषधीय पौधों का आस्तित्व संकट में। नामी-गिरामी कंपनियां शेष पौधों पर बनाती जा रहीं एकाधिकार। फूटी-कौड़ी भी नसीब नहीं वनवासियों को। बावजूद इस नैराश्य के घबराने की बात नहीं क्यों कि दिलासे के लिए हो चुकी है पहल कदमी। अब प्रतीक्षा सार्थक परिणाम की।

इंस्टीट्यूट आफ नेचुरल रिसोर्स ऐंड बायो मेडिकल रिसर्च सेंटर(एनबीआरसी), टकटकपुर, वाराणसी की टीम तीन वर्षों से इस दिशा में कार्य कर रही है। संस्था के निदेशक अनुराग सिंह ने बताया कि जंगल में रहने वाले 70 फीसद लोग प्राथमिक उपचार के लिए वर्तमान में भी औषधीय पौधों पर ही आश्रित हैं। बुजुर्गों को एक-एक पौधों की विशेषताओं की जानकारी है किंतु उनके बच्चों को नहीं।

उ.प्र. राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड, ओबरा थर्मल पावर स्टेशन, पत्रालय–ओबरा, सोनभद्र (उ.प्र.), शुद्धि पत्र, निविदा संख्या टी–01/ सीडब्ल्यूसीडी II / एटीपीएस / 2013–14 द्वारा ओबरा परियोजना कालोनी के आवासीय भवनों के वार्षिक अनुरक्षण एवं मरम्मत का कार्य हेतु निविदा आमन्त्रित की गई थी जिसके भाग प्रथम के खुलने की तिथि दिनांक 18.04.2013 एवं भाग–द्वितीय दिनांक 20.04.2013 निर्धारित थी। अपरिहार्य कारणों से उक्त निविदा विस्तारित की जाती है, अब इस निविदा का भाग प्रथम 03.05.2013 एवं भाग द्वितीय 06.05.2013 को खोला जायेगा। निविदा की अन्य नियम व शर्तें यथावत रहेंगी। अधिशासी अभियन्ता, सेन्ट्रल वर्क्स कान्ट्रैक्ट डिवीजन II, ओबरा–सोनभद्र, प. 111/ ज.स. निविदा/ दि. 22.04.2013, 'राष्ट्रहित में बिजली बचायें'।